

रविवार 30 जून, 2024

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 107: 20

"वह अपने वचन के द्वारा उन को चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: यिर्मयाह 30: 2, 11, 12, 13, 17
यशायाह 54: 13, 14, 17

- ² इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, जो वचन मैं ने तुझ से कहे हैं उन सभों को पुस्तक में लिख ले।
- ¹¹ क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, तुम्हारा उद्धार करने के लिये मैं तुम्हारे संग हूँ।
- ¹² यहोवा यों कहता है: तेरे दुःख की कोई औषध नहीं, और तेरी चोट गहिरी और दुखप्रद है।
- ¹³ तेरा मुकद्दमा लड़ने के लिये कोई नहीं, तेरा घाव बान्धने के लिये न पट्टी, न मलहम है।
- ¹⁷ मैं तेरा इलाज कर के तेरे घावों को चंगा करूँगा, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि तेरा नाम ठुकराई हुई पड़ा है: वह तो सिंघोण है, उसकी चिन्ता कौन करता है?
- ¹³ तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी।
- ¹⁴ तू धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और तू भयभीत होने से बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा।
- ¹⁷ जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्दई हो कर तुझ पर नालिश करें उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. गलातियों 1: 11, 12

- ¹¹ हे भाइयो, मैं तुम्हें जताए देता हूँ, कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं।
- ¹² क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. प्रकाशित वाक्य 10: 1-3, 8-11

- 1 फिर मैं ने एक और बली स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर मेघधनुष था; और उसका मुंह सूर्य का सा और उसके पांव आग के खंभे के से थे।
- 2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी; उस ने अपना दाहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी पर रखा।
- 3 और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है।
- 8 और जिस शब्द करने वाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा; कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।
- 9 और मैं ने स्वर्गदूत के पास जा कर कहा, यह छोटी पुस्तक मुझे दे; और उस ने मुझ से कहा ले इसे खा ले, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी।
- 10 सो मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से ले कर खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।
- 11 तब मुझ से यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर भविष्यद्वक्ता करनी होगी॥

3. यूहन्ना 3: 1-3, 6, 10 (हैं), 11, 22, 23 (से), 25-27, 32-34 (से)

- 1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
- 2 उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरु हो कर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
- 3 यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
- 6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
- 10 यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्त्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?
- 11 मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।
- 22 इस के बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहां उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।
- 23 और यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।

- ²⁵ वहां यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ।
²⁶ और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिस की तू ने गवाही दी है देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।
²⁷ यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।
³² जो कुछ उस ने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उस की गवाही ग्रहण नहीं करता।
³³ जिस ने उस की गवाही ग्रहण कर ली उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।
³⁴ क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।

4. यूहन्ना 13: 1

- ¹ फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।

5. यूहन्ना 14: 5, 6, 10-12, 16, 17, 26 (दिलासा देने वाला)

- ⁵ थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?
⁶ यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।
¹⁰ क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
¹¹ मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
¹² मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
¹⁶ और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
¹⁷ अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।
²⁶ परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

6. 1 यूहन्ना 5: 7, 13, 20

- ⁷ और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है।

- ¹³ मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।
- ²⁰ और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

7. 1 थिस्सलुनीकियों 2: 13

- ¹³ इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उस मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है।

8. भजन संहिता 119: 12 (सं:), 30 (सं:), 105

- ¹² हे यहोवा, तू धन्य है!
- ³⁰ मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है।
- ¹⁰⁵ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।

9. यशायाह 50: 4, 7

- ⁴ प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।
- ⁷ क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक की नाई कड़ा किया।

10. यिर्मयाह 15: 16

- ¹⁶ जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 107: 1-6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

वर्ष 1866 में, मैं ने जीवन, सत्य और प्रेम के क्रिएचरियन साइंस या ईश्वरीय नियमों की खोज की और अपनी खोज का नाम क्रिश्चियन साइंस रखा। वैज्ञानिक मानसिक उपचार के पूर्ण दिव्य सिद्धांत के इस अंतिम रहस्योद्घाटन के स्वागत के लिए भगवान ने कई वर्षों के दौरान मुझे विनम्रतापूर्वक तैयार किया।

2. 127: 28 (इसकी एक)-29

इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है।

3. 123: 16-29

क्रिश्चियन साइंस शब्द का प्रयोग लेखक द्वारा दिव्य उपचार की वैज्ञानिक प्रणाली को नामित करने के लिए किया गया था।

इस रहस्योद्घाटन में दो भाग शामिल हैं:

1. मन-चिकित्सा के इस दिव्य विज्ञान की खोज, शास्त्रों की आध्यात्मिक समझ और सांत्वनादाता की शिक्षाओं के माध्यम से, जैसा कि गुरु ने वादा किया था।
2. वर्तमान प्रदर्शन से यह सिद्ध होता है कि यीशु के तथाकथित चमत्कार विशेष रूप से किसी ऐसे युग से संबंधित नहीं थे जो अब समाप्त हो चुका है, बल्कि वे एक सदैव क्रियाशील ईश्वरीय सिद्धांत को दर्शाते हैं। इस सिद्धांत का संचालन वैज्ञानिक व्यवस्था की शाश्वतता और अस्तित्व की निरंतरता को इंगित करता है।

4. 456: 25-6

एक ईसाई वैज्ञानिक को अपनी पाठ्यपुस्तक के लिए मेरे काम विज्ञान और स्वास्थ्य की आवश्यकता है, और उसके सभी छात्रों और रोगियों को भी इसकी आवश्यकता है। क्यों? पहला: क्योंकि यह इस युग के लिए सत्य की आवाज है, और इसमें क्रिश्चियन साइंस, या मन के माध्यम से उपचार के विज्ञान का पूर्ण विवरण निहित है। दूसरा: क्योंकि यह पहली ज्ञात पुस्तक थी, जिसमें क्रिश्चियन साइंस का विस्तृत विवरण था। इसलिए इसने इस विज्ञान को प्रदर्शित करने के लिए प्रथम नियम दिए, तथा मानवीय परिकल्पनाओं से अदूषित प्रकट सत्य को पंजीकृत किया। अन्य कार्यों ने, बिना इसका श्रेय दिए, इस पुस्तक से उधार लिया है, तथा विज्ञान में मिलावट की है। तीसरा: क्योंकि इस पुस्तक ने शिक्षक और विद्यार्थी, चिकित्सक और रोगी के लिए अन्य पुस्तकों की तुलना में अधिक कार्य किया है।

5. 147: 14-23

यद्यपि इस खंड में मन को ठीक करने का संपूर्ण विज्ञान समाहित है, फिर भी कभी भी विश्वास न करें कि आप इस पुस्तक के एक साधारण अध्ययन से विज्ञान के पूरे अर्थ को आत्मसात कर सकते हैं। पुस्तक का अध्ययन करने की आवश्यकता है, और वैज्ञानिक उपचार के नियमों का प्रदर्शन आपको क्रिश्चियन साइंस के आध्यात्मिक आधार पर मजबूती से स्थापित करेगा। यह प्रमाण आपको पहले से ही पुरातन सिद्धांतों के नष्ट होने वाले जीवाश्मों से ऊपर उठाता है, और आपको अब तक अप्राप्य और प्रतीत होने वाले मंद होने के आध्यात्मिक तथ्यों को समझने में सक्षम बनाता है।

6. 7: 13 केवल

विचारकों का समय आ गया है।

7. 281: 27-2

दिव्य विज्ञान नई शराब को पुरानी बोतलों में नहीं डालता है, आत्मा को सामग्री में, न ही अनंत में। जब हम आत्मा के तथ्यों को समझ लेते हैं, तो भौतिक वस्तुओं के बारे में हमारे झूठे विचार नष्ट हो जाते हैं। पुरानी मान्यता को खत्म किया जाना चाहिए या नया विचार फैलाया जाएगा, और प्रेरणा, जो हमारे दृष्टिकोण को बदलने के लिए है, खो जाएगी। अब, पुराने समय की तरह, सत्य बुराइयों को दूर करता है और बीमारों को ठीक करता है।

8. 460: 12 (सं)-23

... भौतिक विचार के लिए सब कुछ भौतिक है, जब तक कि आत्मा द्वारा इस तरह के विचार को ठीक नहीं किया जाता है।

बीमारी न तो काल्पनिक है और न ही अवास्तविक, - यानी रोगी की भयभीत, झूठी भावना के लिए। बीमारी कल्पना से कहीं अधिक है; यह दृढ़ विश्वास है। इसलिए, इसे अस्तित्व के सत्य की सही समझ के माध्यम से निपटाया जाना चाहिए। यदि ईसाई चिकित्सा पद्धति का दुरुपयोग विज्ञान के मात्र ज्ञानी लोगों द्वारा किया जाता है, तो यह एक कष्टकारी उपद्रव बन जाता है। वैज्ञानिक रूप से इलाज करने के बजाय, यह हर अपंग और विकलांग व्यक्ति पर एक तुच्छ गोलीबारी शुरू कर देता है, और उन्हें सतही और ठंडे दावे के साथ पीटता है, "आपको कुछ भी तकलीफ नहीं है।"

9. 459: 19-23

चाहे द्वेष या अज्ञानता से प्रेरित होकर, एक झूठा अभ्यासी दुष्टता करेगा, और अज्ञानता जानबूझकर की गई दुष्टता से अधिक हानिकारक है, जब दुष्टता पर अविश्वास किया जाता है और उसे उसके प्रारम्भ में ही विफल कर दिया जाता है।

10. 496: 13-19

आपका फल यह साबित करेगा कि परमेश्वर की समझ मनुष्य को क्या लाती है। शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

11. 559: 8-31

वैज्ञानिक चिंतन का "हुआ डाउन वर्ड" महाद्वीप और महासागर से लेकर ग्लोब के रिमोटैस्ट बाउंड तक पहुंचता है। सत्य की अश्रव्य आवाज मानव मन के लिए है, "जब एक शेर दहाड़ता है।" यह रेगिस्तान में और भय के अंधेरे स्थानों में सुनाई देता है। यह बुराई के "सात आवाज़" पैदा करता है, और गुप्त अव्यवस्थाओं की पूरी डायपसन उच्चारण करने के लिए उनकी अव्यक्त ताकतों को रोकता है। तब सत्य की शक्ति प्रदर्शित होती है, — त्रुटि के विनाश में प्रकट किया जाता है। फिर सद्भाव रोने से एक आवाज होगी: "जाओ और छोटी किताब ले जाओ। ... इसे खा ले, और यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी।" नश्वर, स्वर्गीय सुसमाचार का पालन करते हैं। दिव्य विज्ञान को लें।

इस किताब को शुरू से आखिर तक पढ़ें। इसका अध्ययन करें, इसका पालन करें। यह वास्तव में अपने पहले स्वाद में मीठा होगा, जब यह आपको ठीक करता है; लेकिन बड़बड़ाहट सत्य पर नहीं, अगर आपको इसका पाचन कड़वा लगता है। जब आप इस दिव्य तत्त्व के और अधिक निकट पहुँचते हैं, जब आप इस तत्त्व के दिव्य शरीर का सेवन करते हैं - इस प्रकार सत्य और प्रेम की प्रकृति या मूल तत्वों का हिस्सा बनते हैं - तो आश्चर्यचकित न हों और न ही असंतुष्ट हों क्योंकि आपको हेमलॉक प्याला साझा करना होगा और कड़वी जड़ी-बूटियाँ खानी होंगी; क्योंकि प्राचीन समय में पास्का भोज में इस्राएलियों ने इस प्रकार दासता से मुक्त होकर विश्वास और आशा के एल डोराडो में जाने के इस खतरनाक मार्ग की पूर्वकल्पना की थी।

12. 110: 17-24

इस पुस्तक, विज्ञान और स्वास्थ्य में निहित विज्ञान मुझे किसी मानव कलम या जीभ ने नहीं सिखाया; और न जीभ और न कलम उसे उलट सकती है। यह पुस्तक उथली आलोचना या लापरवाह या दुर्भावनापूर्ण छात्रों द्वारा विकृत हो सकती है, और इसके विचारों का अस्थायी रूप से दुरुपयोग और गलत प्रस्तुत किया जा सकता है; लेकिन उसमें निहित विज्ञान और सत्य हमेशा परखने और प्रदर्शित करने के लिए रहेगा।

13. 55: 27-29

संत उहन्ना के शब्दों में: "वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।" इस कम्फ़र्टर को मैं ईश्वरीय विज्ञान समझता हूँ।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एंड्री द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6